

ICSE Solved Paper 2020

HINDI

Class-X

(Maximum Marks : 80)

(Time allowed : Three hours)

(Second Language)

This paper comprises two Sections—Section A and Section B.

Attempt all the questions from Section A.

Attempt any four questions from Section B, answering at least one question each from the two books you have studied and any two other question.

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [].

SECTION A

(40 marks)

Attempt all questions.

1. Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any one of the following topics :

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए :— [15]

- (i) जीवन में खेलकूद मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ सुख समृद्धि भी देते हैं। विद्यार्थी जीवन में इसकी उपयोगिता बहुत अधिक है। अपने किसी प्रिय खेल का वर्णन करें तथा यह खेल भविष्य में आपको कैसे लाभान्वित कर सकता है? एक निबंध में अपनी भविष्य की योजनाएँ भी बताइए।
- (ii) सादा जीवन उच्च विचार ही मनुष्य के जीवन को अनुकरणीय और महान् बनाते हैं। किसी महान् व्यक्ति के अच्छे गुणों का वर्णन कीजिए जिन्हें आप अपने जीवन में सबसे अच्छा मानते हैं, वह आपके गुरु, माता-पिता, या कोई महान् व्यक्ति हो सकता है।
- (iii) 'स्वच्छता अभियान में सरकारी तंत्र की अपेक्षा नागरिकों की जागरूकता अधिक प्रभावपूर्ण मानी जाती है' जनता के सहयोग से ही देश स्वच्छ सुन्दर बन सकता है, आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट करें।
- (iv) एक ऐसी मौलिक कहानी लिखो, जिसके अंत में आपके विचार से यह स्पष्ट हो कि 'बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताए।'।
- (v) नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।



उत्तर- 1 (i)

मेरा प्रिय खेल

बचपन से ही मुझे खेलने-कूदने में ज़्यादा आनंद आता रहा है। जैसे क्रिकेट, हॉकी, वॉलीबॉल, फुटबॉल, बास्केटबॉल, लॉन-टेनिस, बैडमिंटन, गोल्फ आदि अनेक खेलों में मुझे दिलचस्पी है, किंतु इन सभी खेलों में क्रिकेट का खेल मुझे अधिक प्रिय है। आज सारा विश्व क्रिकेट को 'खेलों का राजा' मानता है। क्रिकेट मैच का नाम सुनते ही लोग उसे देखने के लिए उत्साहित हो उठते हैं। जो लोग मैच देखने नहीं जा सकते, वे टी. वी. पर उसे देखना या रेडियो पर उसकी कॉमेंट्री सुनना नहीं चूकते। जो लोग ऑफिस जाते हैं वो भी अपना काम कुछ देर छोड़कर क्रिकेट देखना शुरू कर देते हैं। अखबारों के पन्ने क्रिकेट के समाचारों से भरे होते हैं। यहाँ तक कि जो लोग सफ़र कर रहे होते हैं, वे लोग भी सफ़र करते-करते क्रिकेट का मज़ा लेते हैं। सचमुच क्रिकेट एक अनोखा खेल है और मेरा प्रिय खेल भी।

क्रिकेट का शौक मुझे बचपन से ही रहा है। अपने बड़े भाई को खेलता देख मुझे भी लगाव होने लगा क्रिकेट खेल से। उन्होंने

हमारे मुहल्ले के कुछ मित्रों की एक टीम बनाई थी। यह टीम छुट्टियों के दिन मैदान में क्रिकेट खेलने जाती थी। मैं भी उन सबके साथ खेलने लगा। एक दिन मेरे बल्ले ने दनादन दो छक्के फटकार दिए। धीरे-धीरे भाई ने मुझे इस खेल के सभी दौंव-पेंच सिखा दिए। मैं प्रतिदिन शाम को अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेलता हूँ। अखबारों में प्रकाशित क्रिकेट-सम्बन्धी लेखों एवं चित्रों का मैंने अच्छा-खासा संग्रह तैयार किया है। क्रिकेट के सभी प्रसिद्ध खिलाड़ियों के चित्र मैंने अपने अलबम में संभाल कर रखा है। सचमुच क्रिकेट का नाम सुनते ही मैं अपना सारा काम छोड़ के उसको देखने चला जाता हूँ। पिछले साल मैं अपने स्कूल की क्रिकेट टीम का कप्तान था। सालभर मैं जितने मैच खेले गए थे उन सबमें हमारी टीम की जीत हुई थी। आज मैं सबका प्रिय खिलाड़ी बन चुका हूँ। लोग मुझे अपने स्कूल का 'जूनियर धोनी' मानते हैं।

भविष्य में मैं एक बेहतरीन क्रिकेट खिलाड़ी बनकर अपने देश में ही नहीं पूरे विश्व में अपना नाम ऊँचा करूँगा तथा अपना और अपने परिवार का नाम रोशन करूँगा।

(ii) **सादा जीवन उच्च विचार**

'सादा जीवन उच्च विचार' नीतिवचन मनुष्य को अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं को सीमित करने की सलाह देती है क्योंकि इनका कोई अंत नहीं है। यदि हम अपनी हर इच्छा को पूरा करते हैं तो हम कभी भी संतुष्ट नहीं होंगे क्योंकि इनका कोई अंत नहीं है। कुछ लोगों ने इस कहावत के अर्थ का पालन किया और अपना एक स्थान बना लिया है। ऐसे ही कुछ लोगों में संत कबीरदास, महात्मा गांधी, पोप फ्रांसिस और अब्राहम लिंकन का नाम आता है। इन लोगों ने दूसरे लोगों को भी प्रेरित किया।

वास्तव में विचारों की उच्चता भी जीवन की सादगी का ही एक प्रकार और रूप है। जिनके विचार उच्च होते हैं, वह लोग हमेशा सत्कर्मों के संपादन में ही प्रवृत्त रहा करते हैं। ऐसा करते समय उन्हें बाहरी तड़क-भड़क करने का न तो ध्यान रहता है और न ही समय रहा करता है। उनका विचार और कर्म, बल्कि सारा जीवन व्यवहार के स्तर पर सादगी का प्रतिरूप बनकर रह जाया करता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का कर्ममय जीवन उदाहरणस्वरूप लिया जाता है। जो वह कर गए, संसार के इतिहास में आज तक अन्य कोई भी ऐसा नहीं कर सका। उनका व्यक्तित्व सादगी का प्रतिरूप बनकर रह जाया करता है। सादा जीवन से अर्थ केवल तड़क-भड़क से दूर रहना या सादे वस्त्रों को धारण कर लेना ही नहीं है बल्कि उसका अर्थ विचार और कर्म में भी सादगी है जो कि उच्चता का प्रतीक और उदाहरण बन सके। मैं अपने जीवन का आदर्श अपनी माँ को मानता हूँ जिन्होंने आजीवन सादगी भरा जीवन जिया। वह कभी भी दूसरों से तुलना नहीं करती थीं। उनके पास जो कुछ भी था उसमें ही खुश रहती थीं और हमें भी हमेशा यही शिक्षा देती थीं कि कभी भी दूसरों से तुलना नहीं करना जो तुम्हारे पास है उसमें ही खुश रहने में तुम्हारी महानता है।

सुखद जीवन जीने के लिए सरल जीवन उच्च सोच एक मंत्र है।

हमें भीड़ का हिस्सा बनने से रुकने की कोशिश करनी चाहिए। इस तरह जो चीज़ें हमें खुशी दे सकती हैं और एक स्वस्थ जीवन जीने में हमारी मदद कर सकती हैं वे सादा चीज़ें हैं।

(iii) **स्वच्छता अभियान**

भारत सरकार के स्वच्छता मंत्रालय ने 15 सितंबर से 2 अक्टूबर 2018 का पखवाड़ा राष्ट्रीय स्तर पर 'स्वच्छता ही सेवा' के रूप में मनाया है। इस अभियान के तहत नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश फैलाने और स्वच्छता संबंधी अभियानों को सिरे चढ़ाने के साथ-साथ स्कूली विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति उनकी भागीदारी और योगदान को प्रधानमंत्री को अवगत कराना भी शामिल है। सुविख्यात मिलेनियम स्टार अमिताभ बच्चन और अक्षय कुमार को इस अभियान का ब्रांड एंबेसडर भी बनाया गया है, जिसमें 'दरवाजा बंद, बीमारी बंद' वीडियो अभियान तथा अन्य कई तरह के कार्टूनों द्वारा नागरिकों को स्वच्छता के लिए संदेश दिए जा रहे हैं। स्कूली बच्चों के लिए हैंडबैग कार्यक्रम और स्वच्छता पत्रिका भी प्रकाशित की जा ही है। यह बेहद ही दुःखद सत्य है कि आज़ादी के 70 वर्षों बाद भी सरकार द्वारा स्वच्छता के लिए विशेष अभियान चलाए जा रहे हैं और नागरिकों को जागरूक करने की आवश्यकता पड़ रही है। जब भारत की 80 फीसदी से ज़्यादा आबादी साक्षर हो तो क्या यह सभी नागरिकों के लिए ज़रूरी नहीं हो जाता है कि वे स्वयं स्वच्छता के प्रति पहल करें और उसे अधिमान दें। जब तक भारतीय नागरिक स्वयं स्वच्छता के महत्त्व को समझकर कूड़ा-करकट निपटान को अपनी दैनिक आदत में शुमार नहीं करते हैं, तब तक पूर्ण स्वच्छता के लक्ष्य को हासिल करना मुश्किल होगा। मोदी सरकार के प्रयासों से खुले में शौच से मुक्ति की ओर राष्ट्र ने कदम बढ़ाए हैं।

प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 2014 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम सम्बोधन में कहा था कि हमें गंदगी और खुले में शौच के खिलाफ लड़ाई लड़नी है, पुरानी आदतों को बदलना है और महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर अर्थात् 2 अक्टूबर 2019 तक स्वच्छ भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना है। यह खुशी की बात है कि इस दिशा में प्रगति भी हुई है। बतौर प्रधानमंत्री भारत ने पिछले 4 वर्षों में 9 करोड़ शौचालय का निर्माण किया है और 4.5 लाख गाँव खुले में शौच से मुक्त हो चुके हैं अतः कहा भी गया है कि जहाँ स्वच्छता होती है वहीं देवी-देवताओं का वास होता है। इस सूत्र का अनुसरण करते हुए सभी देशवासियों को अपने घर से बाहर समाज में भी स्वच्छता संबंधी कार्यों में हाथ बँटाना होगा।

(iv) **मौलिक कहानी**

बिना विचारे कोई कार्य करना अक्सर दुःखदायी हो सकता है, इसलिए कोई भी कार्य करने से पहले उसके बारे में एक बार ज़रूर सोचना चाहिए, ताकि आगे चलकर पश्चाताप नहीं करना पड़े।

एक समय की बात है राजा विक्रमे सेन अपना शासन चलाते थे, वह बहुत दयालु प्रवृत्ति के थे, हालांकि किसी भी कार्य को वह

बिना विचारे ही कर देते थे, जो उनका स्वभाव बन गया था। जो कि उनकी सबसे बड़ी कमजोरी थी। राजा के पास एक चिड़िया थी, जो उन्हें अपने प्राणों से भी ज़्यादा प्यारी थी। राजा जहाँ कहीं भी जाते उस चिड़िया को अपने साथ ले जाते। एक पल के लिए भी उसे आँखों से दूर नहीं करते थे। राजा की तरह चिड़िया भी उन्हें पसंद करने लगी थी। एक बार चिड़िया ने राजा से कहा कि वह अपने परिवार वालों से मिलना चाहती है। यह सुनकर राजा ने उसे तत्काल जाने की अनुमति दे दी।

चिड़िया अपने परिवार वालों से मिलकर खूब प्रसन्न हुई। जब वह अपने परिवार वालों से मिलकर वापस आ रही थी, तो चिड़िया के पिता ने राजा को देने के लिए एक अमृत फल दिया। चिड़िया खुशी-खुशी फल लेकर राजमहल जाने लगी। महल दूर होने के कारण रास्ते में ही रात हो गई। चिड़िया ने सोचा कि एक रात पेड़ पर ही बिता कर सुबह जल्दी महल की तरफ बढ़ जाएगी। चिड़िया रात में जिस पेड़ पर बैठी उसी पेड़ के नीचे एक सांप रहता था जो बहुत भूखा था। भोजन की तलाश में सांप जब ऊपर आया और चिड़िया के पास रखे अमृत फल को सांप ने चख लिया जिस कारण से वह अमृतफल जहरीला हो गया था। चिड़िया को इस घटना के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। सुबह होते ही चिड़िया अमृतफल को लेकर राजमहल गई और पिता के द्वारा दी भेंट को राजा को दी। राजा भेंट को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उसे खाने लगा। मंत्री ने राजा से कहा कि पहले इसका परीक्षण करवाना उचित रहेगा। राजा ने मंत्री की बात सुनकर उस फल का परीक्षण एक पशु पर करवाया।

फल खाते ही पशु मर गया और फल विषैला सिद्ध हो गया। इस बात पर राजा बहुत क्रोधित हुए और उस चिड़िया को धोखेबाज़ बताकर उसे मौत के घाट उतार कर महल के बाहर बगीचे में उसे अमृतफल के साथ गढ़वा दिया। समय के साथ राजा इस घटना को भूल गए लेकिन जिस स्थान पर उस चिड़िया और फल को गाड़ा गया था उस स्थान पर एक वृक्ष खड़ा हो गया जिस पर कई अमृत फल लगने लगे। मंत्री ने राजा से कहा कि यह फल भी विषैले होंगे, अतः आप आदेश दें कि इसके आस-पास कोई भी ना जाए। राजा ने आदेश जारी कर पेड़ के चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवार बनवा दी ताकि कोई पेड़ के पास नहीं जाए।

उसी राज्य में एक बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे जो भयंकर कोढ़ रोग से ग्रसित थे और भूखे भी थे। तब बुढ़िया ने बूढ़े से कहा कि आप महल से उस विषैले फल को ले आइए जिससे हम इन कष्टों से आजाद हो जाएँ। बूढ़े ने कोशिश करके उस विषैले फल को प्राप्त कर आधा-आधा दोनों ने बाँट कर खा लिया लेकिन इसके बाद दोनों के रोग समाप्त हो गए। यह देख वे दोनों आश्चर्यचकित हो गए और राजा को सारा हाल कह सुनाया। राजा उनकी बातों को सुनते ही अपने किए पर पछतावा करते हुए समझ गए कि वह एक अमृत फल ही था। उसके बाद उन्होंने निश्चय किया कि कोई भी काम बिना विचारे नहीं करेंगे और उस चिड़िया की याद में महल के बाहर एक भव्य मंदिर बनवाकर उस चिड़िया को हमेशा के लिए अमर बना दिया

अतः बिना विचारे कोई भी कार्य को नहीं करना चाहिए।

(v)

चित्र वर्णन

प्रस्तुत चित्र भीषण बाढ़ का है। इस चित्र में पानी का स्तर बहुत अधिक दिखाई दे रहा है। बाढ़ के पानी में फँसे लोगों को सुरक्षा कर्मी तैराक लोग बाहर निकाल रहे हैं। सुरक्षा कर्मी लोगों और उनके ज़रूरी सामान को उनके साथ बाहर निकाल रहे हैं। कुछ वाहन भी इस पानी में फँसे हुए हैं। इस चित्र में लोगों के पालतू पशु भी फँसे हैं उनको भी बाहर निकाला जा रहा है। लोग पशु गाड़ी पर ही बैठकर बाहर निकाले जा रहे हैं। पानी का स्तर इतना अधिक है कि लोगों के घर तक भी पहुँच रहा है। कुछ लोगों को आनंद की अनुभूति भी हो रही है।

2. Write a letter in Hindi in approximately 120 words on any one of the topics given below :

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए :

[7]

- “आप अपने परिवार के साथ किसी सुन्दर शहर की यात्रा करके आए हैं आपने वहाँ क्या-क्या देखा ? वह शहर इतना प्रसिद्ध क्यों है ? अपने मित्र को पत्र लिखकर वर्णन करें।”
- आपके क्षेत्र में मलेरिया तथा डेंगू का प्रकोप बढ़ गया है। इसकी रोकथाम के लिए नगर-निगम के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए।

उत्तर (i)

मित्र को पत्र

6, विद्या नगर

नई दिल्ली

दिनांक - 23/2/20xx

प्रिय मित्र रंजीत,

सप्रेम नमस्ते

मैं यहाँ पर कुशल रहते हुए आपकी कुशलता की कामना करता हूँ। मित्र रंजीत इस गर्मी की छुट्टी में तुम कहाँ गए थे। तुम्हें बताते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि मैं तो इस बार दिल्ली घूमने गया था। वहाँ हमने बहुत सारी ज्ञानवर्धक और रोचक स्थानों को देखा। मैं नई दिल्ली की विविध प्रमुख दर्शनीय स्थलों की सुंदरता को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया। ऐसी खूबसूरती देखकर हम सब परिवार वाले दंग रह गए।

कुतुब मीनार, राजघाट, शांतिभवन, विजयघाट, चिड़ियाघर, बिड़ला मंदिर, शक्तिस्थल, मुगल गार्डन, जंतर-मंतर, छतरपुर की देवी का मंदिर, अक्षरधाम मंदिर, कमल मंदिर, नेहरू ग्रह जैसे कई दर्शनीय स्थल हम सब देखकर आश्चर्यचकित रह गए। यह सब नई दिल्ली के प्रमुख पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। मेरी सलाह मानो और तुम भी अपने परिवार के साथ एक बार अवश्य दिल्ली घूमने जाना और इसकी सुंदरता का अनुभव मुझे भी बताना। मुझे पत्र अवश्य लिखना।

तुम्हारा मित्र

अ.ब.स

(ii) नगर निगम अध्यक्ष को पत्र

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक – 26/02/20xx

नगर निगम अध्यक्ष,

नई दिल्ली

विषय :- मलेरिया तथा डेंगू के बढ़ते प्रकोप की रोकथाम के लिए नगर निगम अध्यक्ष को प्रार्थना पत्र।

महोदय,

आपसे सविनय निवेदन है कि मेरा नाम राजीव सिंह है। मैं अंबेडकर नगर नई दिल्ली का निवासी हूँ। मैं आपको अपने क्षेत्र में फैल रहे मलेरिया तथा डेंगू के बढ़ते प्रकोप की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि मेरे मोहल्ले में सफ़ाई की बहुत दुर्व्यवस्था है। मेरे क्षेत्र में गली की नालियों तथा सड़कों में कूड़ा करकट, मलबे आदि का ढेर लगा रहता है और गंदा पानी भी बहता है। इन पर मच्छर-मक्खियाँ मँडराते रहते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हमारी कॉलोनी में बहुत से लोग मलेरिया तथा डेंगू की बीमारी से पीड़ित हैं। अगर ऐसे ही चलता रहा तो हमारा बाहर निकलना मुश्किल हो जाएगा।

अतः आपसे अनुरोध है कि हमारी कॉलोनी की इस दुर्व्यवस्था पर अपना ध्यान आकृष्ट करते हुए इसे यथाशीघ्र सुधारने का प्रयत्न कीजिए जिससे मलेरिया तथा डेंगू जैसी अनेक बीमारियों को और अधिक बढ़ने से रोका जा सके।

धन्यवाद।

भवदीय

अ. ब. स.

3. Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible :

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए —

जापान के विरुद्ध दूसरे विश्व महायुद्ध में अमेरिका ने अणुबम का प्रयोग किया। सन् 1945 की गर्मियों में जापान खंडहरों का देश बन गया। लाखों आदमी मर गए थे। चालीस प्रतिशत नगर नष्ट हो गए थे। शहर की आबादी आधी रह गई थी। भूखा जापान-चिथड़ों में लिपटी जनता दीन-हीन, स्तब्ध, हैरान और क्षत-विक्षत हो गई थी। जापान में न कोयला होता है, न लोहा, न तेल और न ही यूरेनियम। बस थोड़ी-सी कृषि योग्य भूमि। इस पराजय, दुःख और विनाश के बावजूद भी जापान फिर खड़ा हो गया। यह दुनिया का सबसे ज़्यादा विकसित और औद्योगिक राष्ट्र बन गया। यह चमत्कार कैसे हुआ ? जापान की समृद्धि और प्रगति के लिए संभवतः राष्ट्रीय गुणों को टटोलना होगा, जो कि वहाँ की जनता की स्वाभाविक खूबियों और चरित्र से मिलता है। जापान की पराजय के पश्चात् एक अमेरिकी व्यापारिक संस्था

ने अपनी शाखा जापान में खोली। उसने शाखा में सभी कर्मचारी जापानी रखे। अमेरिकी नियम के अनुसार जापान में सप्ताह में पाँच दिन काम करने का निश्चय किया गया। दो दिन शनिवार और रविवार की छुट्टी रखी गई। उसने सोचा था कि उसकी उदारता का जापानी कर्मचारी और कारीगर स्वागत करेंगे लेकिन यह देखकर संस्था के व्यवस्थापक को आश्चर्य हुआ कि जापानी कर्मचारी इस व्यवस्था का सामूहिक विरोध कर रहे थे। उसने कर्मचारियों को बुलाया और उसका कारण पूछा।

जापानी कर्मचारी एक आवाज़ में बोले, — “हमें कष्ट है। हम दो दिन खाली नहीं रहना चाहते। हमारे लिए सप्ताह में सिर्फ एक दिन का ही अवकाश काफी है। ज्यादा आराम से हम प्रसन्न नहीं होंगे। इससे हम आलसी बन जाएँगे, मेहनत के काम में हमारा दिल नहीं लगेगा, हमारा स्वास्थ्य गिरेगा। हमारा राष्ट्रीय चरित्र गिरेगा। अवकाश की वजह से हम व्यर्थ ही घूमेंगे-फिरेंगे, हम फिजूलखर्ची बनेंगे। जो छुट्टी हमारी सेहत बिगाड़े तथा आदत खराब करें, आर्थिक स्थिति खराब करें, हमें ऐसा अवकाश नहीं चाहिए।”

अमेरिकी व्यवस्थापक ने अपनी टोपी सिर से नीचे उतारी। उसने जापानी कारीगरों का अभिवादन करते हुए कहा — “आप जापानी भाइयों की समृद्धि और सफलता का रहस्य आपका परिश्रम और लगन है। आप कभी भी बीमार तथा गरीब नहीं रह सकते।

- जापान में विनाशकारी दुर्घटना कब और कैसे हुई ? उसका क्या परिणाम हुआ ? [2]
- उस देश के पास अपने प्राकृतिक संसाधन क्या हैं ? वह पुनः विकसित और समृद्धि राष्ट्र कैसे बना ? [2]
- व्यापार की दृष्टि से जापान में कौन आया ? उसके आश्चर्य-चकित होने का क्या कारण था ? [2]
- जापानी कर्मचारी उस व्यापारिक संस्था का विरोध क्यों कर रहे थे ? उन्होंने व्यवस्थापक से क्या कहा ? [2]
- व्यवस्थापक पर कर्मचारियों की बात का क्या प्रभाव पड़ा ? उसने उनसे क्या कहा ? [2]

उत्तर (i) जापान में विनाशकारी दुर्घटना सन् 1945 में अमेरिका द्वारा जापान के विरुद्ध दूसरे विश्व महायुद्ध के दौरान अणुबम के प्रयोग के कारण हुई। सन् 1945 की गर्मियों में जापान खंडहरों का देश बन गया था। इसमें जापान के लाखों आदमी मर गए थे। चालीस प्रतिशत नगर नष्ट हो गया था। शहर की आबादी आधी हो गई थी। जापान भूखा-चिथड़ों में लिपटी जनता दीन-हीन, स्तब्ध, हैरान और क्षत-विक्षत हो गई थी।

(ii) उस देश के पास अपने प्राकृतिक संसाधन के नाम पर केवल कृषि योग्य थोड़ी-सी भूमि थी। लेकिन जापान की जनता की स्वाभाविक खूबियाँ और राष्ट्रीय चरित्र के कारण आज यह दुनिया का सबसे ज़्यादा विकसित और औद्योगिक राष्ट्र बन गया।

(iii) व्यापार की दृष्टि से जापान में एक अमेरिकी व्यापारिक

संस्था आई। उसके आश्चर्य चकित होने का कारण संस्था में दो दिनों का अर्थात् शनिवार और रविवार के अवकाश का जापानी कर्मचारी सामूहिक विरोध कर रहे थे।

- (iv) जापानी कर्मचारी उस व्यापारिक संस्था का विरोध इसलिए कर रहे थे क्योंकि वह दो दिन का अवकाश नहीं चाहते थे। उन्होंने व्यवस्थापक से कहा कि हमें कष्ट है। हम दो दिन खाली नहीं रहना चाहते। हमारे लिए सप्ताह में एक दिन का ही अवकाश काफी है। ज़्यादा आराम से हम आलसी बन जाएँगे, मेहनत के काम में हमारा मन नहीं लगेगा जिससे हमारा स्वास्थ्य भी गिरेगा। हमारा राष्ट्रीय चरित्र गिरेगा। अवकाश की वजह से हम व्यर्थ में घूमेंगे-फिरेंगे और फिज़ूलखर्ची बनेंगे अतः हमें ऐसा अवकाश नहीं चाहिए।
- (v) कर्मचारियों की बात सुनकर अमेरिकी व्यवस्थापक ने अपनी टोपी सिर से नीचे उतारी और उसने जापानी कारीगरों का अभिवादन करते हुए कहा-“आप जापानी भाइयों की समृद्धि और सफलता का रहस्य आपकी मेहनत और लगन है। आप कभी भी बीमार तथा ग़रीब नहीं रह सकते हैं।

4. Answer the following according to the instructions given :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :—

- (i) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विलोम लिखिए :—
सेवक, बुद्धिमान, न्याय, स्वदेश। [1]
- (ii) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :—
कपड़ा, भाग्य, सुगन्ध। [1]
- (iii) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों से विशेषण बनाइए :—
भारत, आदर, पीड़ा, डर। [1]
- (iv) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :—
राछस, क्योकी, आदरनिय, कार्यक्रम। [1]
- (v) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए :—
दाँत पीसना, घुटने टेकना, ज़मीन ताकना। [1]

(vi) कोष्ठक में दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए :—

- (a) रमेश ईश्वर में बहुत विश्वास रखता है।
(रेखांकित शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करके वाक्य पुनः लिखिए।) [1]
- (b) जज ने अपराधी को सज़ा सुनाई।
(‘द्वारा’ शब्द का प्रयोग करके वाक्य पुनः लिखिए।) [1]
- (c) छात्र यात्रा पर जा रहे हैं।
(भविष्यकाल में बदलिए।) [1]

उत्तर विलोम शब्द :-

- (i) सेवक - सेविका,
बुद्धिमान - बुद्धिमती,
न्याय - अन्याय, स्वदेश - परदेश।

पर्यायवाची शब्द :-

- (ii) कपड़ा - वस्त्र, वसन।,
भाग्य - किस्मत, तकदीर।
सुगन्ध - खुशबू, सुवास।

विशेषण :-

- (iii) भारत - भारतीय,
आदर - आदरणीय,
पीड़ा - पीड़िता,
डर - डरावना।

शुद्ध रूप :-

- (iv) राछस - राक्षस,
क्योकी - क्योकि,
आदरनिय - आदरणीय,
कार्यकर्म - कार्यक्रम।

मुहावरे :-

- (v) दाँत पीसना - पिताजी के ताने सुनकर लखन दाँत पीसने लगा।
घुटने टेकना - सीता की पाककला के आगे सभी प्रतिभागियों ने घुटने टेक दिए।
ज़मीन ताकना - एक छोटे - से बच्चे का जवाब सुनकर हमलोग ज़मीन मुँह ताकते रह गए।
- (vi) (a) रमेश आस्तिक है।
(b) जज द्वारा अपराधी को सज़ा सुनाई गई।
(c) छात्र यात्रा पर जा रहे होंगे।

SECTION B

(40 marks)

Questions from only two of the following
textbooks are to be answered.

Attempt four questions from this Section.

You must answer at least one question from each of the two books, you have studied
and any two other questions from the same books that you have chosen.

साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ

5. Read the extract given below and answer in Hindi
the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों
के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

एक दुःखिया स्त्री तुमको अपनी सहायता के लिए बुला
रही है। जाओ, उसकी सहायता करके लौट आओ। तुम्हारा
सामान यहीं रहेगा। तुमको अभी यहीं रहना होगा। समझे !
अभी तुमको मेरी संरक्षता की आवश्यकता है। उठो, नहा-धो
लो। जो ट्रेन मिले, उससे पटना जाकर ब्रजकिशोर की चालाकियों
से मनोरमा की रक्षा करो और फिर मेरे यहाँ चले आना। यह सब
तुम्हारा भ्रम था। संदेह था।

['संदेह'—जयशंकर प्रसाद]

['Sandeh'—Jaishankar Prasad]

- (i) प्रस्तुत कथन के वक्ता और श्रोता कौन हैं? उनका
परिचय दीजिए। [2]
- (ii) वक्ता ने यह कथन कब और क्यों कहा ? [2]
- (iii) मनोरमा कौन थी ? उसे रक्षा की आवश्यकता क्यों थी ?
उसने किसे सहायता के लिए बुलाया। [3]
- (iv) 'संदेह' का क्या अर्थ है ? इस कहानी का नाम 'संदेह'
क्यों रखा गया है ? समझाकर लिखिए। इस कहानी में
कौन-कौन किस-किस पर कैसे संदेह करता है ? [3]

- उत्तर (i) प्रस्तुत कथन की वक्ता श्यामा है और रामनिहाल श्रोता है।
श्यामा एक आदर्शवादी विधवा, समझदार और चरित्रवान
नारी है। वह स्वभाव से कठोर और ब्रती है। रामनिहाल
एक महत्वाकांक्षी, उन्नतिशील विचारधारा वाला व्यक्ति
है। वह बहुत भावुक है।
- (ii) वक्ता श्यामा ने रामनिहाल को एक दुःखिया स्त्री की
मदद करने के लिए तब कहा जब रामनिहाल अपना
बोरिया-बिस्तर बांधकर भागना चाहता था।
- (iii) मनोरमा एक सुंदर और पतिव्रता स्त्री है। वह मोहनबाबू
की पत्नी है। उसे शक था कि ब्रजकिशोर मोहनबाबू
को पागल साबित कर उनकी ज़ायदाद हड़पना चाहता है
इसलिए उसने अपनी सहायता के लिए रामनिहाल को पत्र
लिखकर बुलाया।
- (iv) 'संदेह' का अर्थ है - शक करना या किसी बात पर
निश्चित न होना। जयशंकर प्रसाद जी की 'संदेह' कहानी
एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। जिसमें उन्होंने मनुष्य का
मनोविज्ञान के रूप में चित्रण किया है। एक तरफ़ श्यामा
के साथ प्रेम के संदेह में रामनिहाल अपने जीवन का

सकारात्मक रूप देता है तो दूसरी तरफ़ मनोरमा के
चरित्र पर संदेह के कारण उसका पति मोहन बाबू अपने
पारिवारिक जीवन को नरक बना लेते हैं। रामनिहाल इस
संदेह को अपने मन में जगह देते हैं कि मनोरमा उनसे प्रेम
करती है और श्यामा को इस बात पर संदेह है क्योंकि
उसे लगता है कि मनोरमा रामनिहाल से प्रेम नहीं करती
है। इस कहानी में मनोरमा और मोहनबाबू के बीच भी
संदेह के कारण कलह मच जाता है। 'सभी पात्र कहानी
में संदेह के कारण ही परेशान रहते हैं तथा पूरी कहानी
आरंभ से अंत तक संदेह के दायरे में घूमती रहती है और
अपने शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध करती है।

6. Read the extract given below and answer in Hindi
the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों
के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

रमज़ान ने ठंडी साँस भरी। उसने रसीला को ठहरने का संकेत
किया और आप कोठरी में चला गया। थोड़ी देर बाद उसने कुछ
रुपए रसीला की हथेली पर रख दिए। रसीला के मुँह से एक
शब्द भी न निकला। सोचने लगा "बाबू साहब की मैंने इतनी
सेवा की पर दुःख में उन्होंने साथ न दिया। रमज़ान को देखो
गरीब है, परंतु आदमी नहीं देवता है। ईश्वर उसका भला करें।"

['बात अठन्नी की'—सुदर्शन]

['Baat Atthanni Ki'—Sudarshan]

- (i) रमज़ान कौन है ? उसका परिचय दीजिए। [2]
- (ii) रसीला और रमज़ान किस-किस के यहाँ काम करते थे ?
उन दोनों में क्या समानता थी ? [2]
- (iii) रसीला ने रमज़ान को देवता क्यों कहा है ? समझाकर
लिखिए। [3]
- (iv) कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। [4]
- उत्तर (i) रमज़ान रसीला का पड़ोसी था जो जिला मजिस्ट्रेट शेख
सलीमुद्दीन का चौकीदार है। वह रसीला का अच्छा दोस्त
था। रमज़ान नरम दिलवाला और साफ़ मन का व्यक्ति
था। खुद गरीब होते हुए भी उसने संकट में पड़े अपने
मित्र को पैसे उधार देकर उसकी मदद की।
- (ii) रसीला इंजीनियर बाबू जगत सिंह के यहां 10 रुपए
महीना पर नौकर था और रमज़ान ज़िला मजिस्ट्रेट शेख
सलीमुद्दीन का चौकीदार था। समानता - वे दोनों किसी
के घर पर वेतन के लिए नौकरी करते थे। दोनों में बहुत
मैत्री थी। रमज़ान और रसीला जिनके घर नौकरी करते
थे वे दोनों ही उस शहर के सम्मानित व्यक्ति थे।

- (iii) रसीला ने रमजान को देवता इसलिए कहा क्योंकि रसीला का घर कम वेतन में चल नहीं पा रहा था। उसके बच्चे भी बीमार हैं परंतु उसके पास रुपया नहीं है। मालिक से पेंशन मांगने के बाद भी कोई सहायता नहीं मिली तब उसकी सहायता रमजान ने की जो खुद भी गरीब था पर रसीला का मित्र था। मुसीबत के समय रमजान ने उसको रुपए उधार देकर उसकी मदद की तब उसने सोचा कि बाबू साहब की मैंने इतनी सेवा की पर दुःख में उन्होंने साथ ना देकर रमजान ने उसका साथ दिया अब उसने कहा वह आदमी नहीं देवता है।
- (iv) 'बात अठन्नी की' कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मक शीर्षक है। जब कहानी का शीर्षक किसी विशेष अर्थ की ओर इंगित करता है तब उस शीर्षक को प्रतीकात्मक कहते हैं। 'बात अठन्नी की' कहानी समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की ओर इशारा करते हुए न्याय व्यवस्था पर सवाल खड़ा करती है। साहित्य ही समाज का दर्पण होता है। इस कहानी में कथाकार श्री सुदर्शन जी ने कहानी के माध्यम से समाज के कड़वे सच का परिचय दिया है। पूरी कहानी अठन्नी पैसे के इर्द-गिर्द घूमती दिखाई देती है। रसीला को अपने बीमार बच्चों के इलाज के लिए अपने मित्र जो कि पड़ोसी का चौकीदार रमजान हैं, से पैसे लेकर भेजता है। बच्चों के ठीक हो जाने पर थोड़े- थोड़े करके पैसे चुका देता है लेकिन सिर्फ आठ आने बकाया रह जाते हैं। एक दिन अपने मालिक जगत सिंह द्वारा पाँच रुपए की मिठाई मँगाए जाने पर वह आठ आने की हेरा- फेरी कर अपना उधार रमजान को चुका देता है लेकिन उसकी यह चोरी मालिक द्वारा पकड़ ली जाती है तथा वह पुलिस को सौंप दिया जाता है। अदालत में उसे छः महीने की सजा सुनाई जाती है। इस प्रकार उसके साथ बहुत अन्याय हुआ था। इस दुनिया में गरीबों पर अमीरों द्वारा सिर्फ अपनी स्वार्थ सिद्धि करने के लिए अत्याचार किए जाते हैं। सिर्फ आठ आने के लिए रसीला को मार भी खानी पड़ी तथा छः माह की सजा भी दी गई। पूरी कहानी आरंभ से अंत तक अठन्नी के चारों ओर घूमती है अतः बात अठन्नी की शीर्षक पूरी तरह से सार्थक एवं उचित है।

7. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

उनका 'हृदय' परिवर्तन हो गया है। वे आज सात दिनों से घास खा रहे हैं। रात-दिन भगवान के भजन और परोपकार में लगे रहते हैं। उन्होंने अपना जीवन जीव-मात्र की सेवा में अर्पित कर दिया है। अब वे किसी का दिल नहीं दुखाते। किसी का रोम तक नहीं छूते।

['भेड़ें और भेड़िए'—हरिशंकर परसाई,]

['Bheden Aur Bhediyeen'—Harishankar Parsai]

- (i) प्रस्तुत कथन किसने, किससे और क्यों कहा ? स्पष्ट कीजिए। [2]
- (ii) वक्ता ने किसके 'हृदय परिवर्तन' की बात कही ? उसने उसके बारे में क्या-क्या कहा ? [2]
- (iii) वक्ता का चरित्र-चित्रण कीजिए। वह चुनावी सभा में किसे जिताना चाहता था और कैसे ? [3]
- (iv) चुनाव का क्या परिणाम हुआ ? इस कहानी के माध्यम से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहते हैं ? चुनाव जीतने वाले ने सबसे पहला क्या नियम बनाया और इस नियम से किसका अधिक लाभ हुआ ? [3]
- उत्तर (i) प्रस्तुत कथन एक बूढ़े सियार ने भेड़ों के समूह से कहा क्योंकि जंगल में चुनाव होने वाले थे जिसमें भेड़ियों की हार निश्चित थी तो भेड़ियों के द्वारा शिकार से बचे हुए मांस से अपना पेट भरने वाले सियारों के लिए चिंताजनक स्थिति थी सो सियार ने भेड़िए के प्रचार के लिए यह सब बातें कहीं।
- (ii) वक्ता बूढ़े सियार ने भेड़िए राजा के हृदय परिवर्तन की बात कही। उसने भेड़िए राजा के विषय में बताया कि वे आज सात दिनों से घास खा रहे हैं। रात-दिन भगवान के भजन और कीर्तन में लगे रहते हैं। उन्होंने अपना जीवन जीव-मात्र की सेवा में लगा दिया है। वे अब किसी का दिल नहीं दुःखाते।
- (iii) वक्ता बूढ़ा सियार बड़ा ही चतुर, स्वार्थी, धूर्त और अनुभवी भेड़ियों का चापलूस है। अपने अनुभव के आधार पर वह भेड़ियों की मदद कर उनकी नज़रों में आदरणीय बन जाता है और बिना कुछ करे उसे भेड़ियों द्वारा बचा हुआ मांस खाने को मिल जाता है। इसलिए वह चुनावी सभा में भेड़ियों को जिताना चाहता है। सियार ने भेड़िए का प्रचार करने तथा भेड़ों को भ्रमित करने के लिए सियारों को तीन रंगों में रंगा।
- (iv) चुनाव का यह परिणाम हुआ कि भेड़िए पक्ष की जीत हुई। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने प्रजातंत्र में धोखेबाज़ी, झूठे, ढोंगी तथा चालाक राजनेताओं की पोल खोलने के लिए भेड़ और भेड़िए की इस कथा को माध्यम बनाया गया है। भेड़ें सीधे-सादे व्यक्तियों का प्रतीक हैं, जो चालाक, स्वार्थी और धोखेबाज़ राजनेताओं के बहकावे में आकर उनको चुनते हैं तथा चुने जाने पर भेड़िए रूपी यह राजनेता अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं तथा भोली-भाली जनता का शोषण करते हैं। इस कहानी के माध्यम से राजनेताओं की पोल खोली गई है। चुनाव जीतने के बाद भेड़ियों ने पहला कानून यह बनाया कि रोज़, सुबह नाश्ते में उन्हें भेड़ का मुलायम बच्चा खाने को दिया जाए, दोपहर के भोजन में एक पूरी भेड़ तथा शाम को स्वास्थ्य के ख्याल से कम खाना चाहिए, इसलिए आधी भेड़ दी जाए।

[साहित्य सागर — पद्य भाग]

(Sahitya Sagar—Poems)

8. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

जाके प्रिय न राम वैदेही ।

तजिए ताहि कोटि वैरी सम जदपि परम सनेही ।।

तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण वन्धु, भरत महतारी ।

बलि गुरु तज्यो, कन्त ब्रज बनि तहिन, भए मुद मंगलकारी ।।

नाते नेह राम के मनियत, सुहृद, सुसेव्य जहाँ लौं ।

अंजन कहा आँख जेहि फूटै, बहू तक कहौं कहाँ लौं ।।

['विनय के पद' तुलसीदास]

['Vinay Ke Pad'—Tulsidas]

- (i) 'तजिए ताहि कोटि वैरी सम' से कवि क्या कहना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए । [2]
- (ii) राम की भक्ति में किन-किन लोगों ने किनका त्याग किया है ? [2]
- (iii) 'अंजन कहा आँख जेहि फूटै, बहु तक कहौं कहाँ लौं।' पंक्ति की व्याख्या कीजिए । [3]
- (iv) कवि तुलसी के इष्टप्रभु का नाम बताइए। उनकी भाषा और भक्तिभावना का परिचय दीजिए । [3]

साहित्य सागर - पद्य भाग

- उत्तर (i) 'तजिए ताहि कोटि वैरी सम' से कवि कहते हैं कि जिनके मन में सीता-राम की भक्ति नहीं है, वह हमारे चाहे कितने भी प्रिय क्यों न हों, उसे करोड़ों शत्रुओं के समान समझ कर त्याग देना चाहिए। कवि श्रीराम के अनन्य भक्त थे उनके अनुसार राम-भक्ति के द्वारा ही जीव का कल्याण संभव है।
- (ii) राम की भक्ति में 'प्रह्लाद ने अपने पिता हिरण्यकश्यप का, विभीषण ने अपने सगे भाई रावण का, भरत ने अपनी माता कैकेई का, राजा बलि ने अपने गुरु शुक्राचार का और ब्रज की स्त्रियों अर्थात् गोपियों ने कृष्ण के प्रेम में अपने पतियों का परित्याग किया।
- (iii) 'अंजन कहा आँख जेहि फूटै, बहु तक कहौं कहाँ लौं' पंक्ति का अर्थ है कि ऐसे सुरमे या काजल को आँख में लगाने से क्या लाभ जिसका प्रयोग करने पर आँख ही फूट जाए ? अर्थात् राम और सीता के विरोधी व्यक्तियों से प्रेम करने तथा संबन्ध बनाने से हानि ही होती है अतः जिनका राम से स्नेह है तथा जो राम का प्यारा है उसका सब तरह से कल्याण ही होता है।
- (iv) कवि तुलसीदास के इष्टप्रभु श्रीराम जी थे। वे राम के अनन्य भक्त थे। इनकी भक्ति दास्यभाव की भक्ति थी। कवि तुलसीदास जी की रचनाओं में ब्रज तथा अवधी दोनों भाषाओं का समावेश मिलता है। संस्कृत के शब्दों का भी प्राचुर्य है।

9. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

उसे भी आती होगी याद ?

उसे हाँ आती होगी याद ।

नहीं तो रूढ़िगी मैं आज

सुनाऊँगी उसको फरियाद ।।

कलेजा माँ का, मैं संतान,

करेगी दोषों पर अभिमान ।

मातृ वेदी पर हुई पुकार,

चढ़ा दो मुझको, हे भगवान

[मातृ मंदिर की ओर—सुभद्राकुमारी चौहान]

[Matri Mandir Ki Or—Subhadra Kumari Chauhan]

- (i) कवयित्री किससे और क्या फरियाद करना चाहती है ? [2]
- (ii) 'माँ का कलेजा' किस प्रकार का होता है ? वह अपनी संतान के साथ किस प्रकार का व्यवहार करती है ? [2]
- (iii) 'मातृ-वेदी पर हुई पुकार' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए लिखिए कि कवयित्री क्या कहना चाहती है ? [3]
- (iv) 'मातृ मन्दिर की ओर' कविता से क्या प्रेरणा मिलती है ? अपने शब्दों में लिखिए । [3]
- उत्तर (i) कवयित्री माँ से फरियाद करते हुए कहती है कि मुझे अपने प्राणों का बलिदान करना भी पड़े तो वह सहर्ष स्वीकार करेगी। वह भगवान से प्रार्थना करते हुए कहती है कि वह उसे मातृमंदिर की पुकार पर आत्मोत्सर्ग करने की शक्ति प्रदान करें।
- (ii) 'माँ का कलेजा' उदार होता है। हमेशा अपने बच्चों के दोषों को क्षमा कर देने वाला होता है। माता के हृदय में अपनी संतान के प्रति ममता, स्नेह तथा वात्सल्य के भाव भरे होते हैं। माँ के हृदय की यह विशेषता होती है कि वह अपने बच्चों के दोषों को क्षमा कर दे। अपने बच्चों के दोषों को देखकर भी उसके हृदय में बच्चों के लिए प्यार कम नहीं होता, बल्कि संतान के प्रति गर्व का भाव होता है।
- (iii) 'मातृ-वेदी पर हुई पुकार' पंक्ति का आशय है कि मातृभूमि पर पुकार हुई है, इसलिए कवयित्री अपना बलिदान देना चाहती है और भारत माँ को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराना चाहती है।
- (iv) 'मातृ मंदिर की ओर' कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जन-जन में देशभक्ति की भावना को जाग्रत करना है। वह देशभक्तों को देशभक्ति के मार्ग में आई हुई बाधाओं को दूर कर भारत माँ के चरणों में अपना जीवन समर्पित करने को कहती हैं।

10. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :-

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार।

ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराय।

सब धरती कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाय।।

['साखी'— कबीरदास]

['Saakhi'—Kabirdas]

- (i) कबीरदास जी ने पहाड़ पूजने की बात क्यों कही है ? इस दोहे के माध्यम से वे हमें क्या सन्देश देना चाहते हैं ? मूर्ति पूजा के बारे में उनके क्या विचार थे ? [2]
- (ii) उन्होंने चक्की की तुलना किससे की है ? वे उसे अच्छा क्यों मानते हैं ? [2]
- (iii) उन्होंने 'स्याही' और 'लेखनी' किससे बनाने की बात कही है ? वे किस पर हरि कथा लिखना चाहते हैं ? [3]
- (iv) 'हरि गुन लिखा न जाए' — इस कथन से उनका क्या आशय है ? समझाकर लिखिए। संत कबीर की भक्ति भावना की विशेषताएँ बताइए और वह कैसे भगवान की पूजा करना चाहते थे ? [3]

उत्तर (i) कबीरदास ने मूर्ति-पूजा पर व्यंग्यात्मक प्रहार करते हुए कहा है कि यदि पत्थर से बने ईश्वर की पूजा करने भर से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है तो वे पत्थर के पहाड़ को भी पूजने को तैयार हैं। कबीर कहते हैं कि पत्थर की मूर्ति से तो वह चक्की ज़्यादा अच्छी है जिससे अन्न को पीसकर सबकी भूख शांत की जा सकती है। इस दोहे के माध्यम से कवि यह संदेश देते हुए कहते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति दीन-दुःखियों की मदद करने से ही प्राप्त होती है। कबीरदास जी ने हिंदुओं की मूर्ति पूजा पर करारा व्यंग्य किया है।

(ii) कबीरदास जी ने 'चक्की' की तुलना पत्थर की मूर्ति से की है। कबीर मूर्ति-पूजा के कट्टर विरोधी थे। वे इसे एक आडंबर बताते थे। उनके अनुसार पत्थर की बनी मूर्ति की पूजा से कुछ प्राप्त नहीं होने वाला है। पत्थर की उस मूर्ति से तो 'चक्की' बेहतर है क्योंकि इसके प्रयोग से अनाज का आटा तो प्राप्त किया जा सकता है, जिसके प्रयोग से सभी का पेट भरता है।

(iii) कबीरदास जी ने सातों समुद्रों के पानी को 'स्याही', तथा सभी वनों की लकड़ी को 'लेखनी' बनाने की बात कही है। वे सारी 'धरती' को कागज के रूप में प्रयोग कर हरि कथा लिखना चाहते हैं।

(iv) 'हरि गुन लिखा न जाए' कथन से कवि का आशय है कि भगवान के अनंत गुणों का बखान नहीं किया जा सकता है, उन्हें संपूर्ण रूप से लिखकर भी प्रकट नहीं किया जा सकता। ईश्वर के गुणों का उल्लेख करना असंभव है।

संत कबीर की भक्तिभावना की विशेषताएँ हैं कि वे निर्गुणवादी कवि थे। वे हिंदू तथा मुस्लिम धर्म में व्याप्त अनेक प्रकार के ढोंग-ढकोसलों तथा आडंबरों के कट्टर विरोधी थे। उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति शुद्ध आचरण एवं ज्ञान से होती है, इसलिए उन्होंने अपनी साखियों में हिंदुओं और मुसलमानों को इन धर्मों में व्याप्त रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों के लिए फटकारा है।

[नया रास्ता—सुषमा अग्रवाल]

(Naya Raasta—Sushma Agarwal)

नोट : शेष प्रश्न कोर्स में नहीं हैं इसलिए उनके उत्तर नहीं लिखे गए हैं

11. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :-

मेहमानों का शानदार स्वागत किया गया। मीनू को देखने के लिए अमित, उसके पिता मायारामजी, माताजी व छोटी बहन मधु आये थे। उनके आतिथ्य में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी गयी थी। परिवार के हर सदस्य के हृदय में नया जोश व उमंग था, मानो उनके घर कोई देवता आ गये हों।

- (i) मेहमान कौन हैं ? वे कहाँ और क्यों आए हैं ? [2]
- (ii) किसके, हृदय में जोश और उमंग था ? क्यों ? [2]
- (iii) मेहमानों के स्वागत के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं ? [3]
- (iv) अमित और मीनू के बीच हुई बातचीत को संक्षेप में लिखिए। [3]

उत्तर (i) मेहमान मेरठ से मायारामजी, उनका बेटा अमित, माताजी और छोटी बहन मधु हैं। वह मीनू के घर उसे देखने के लिए आए हैं।

(ii) मीनू के परिवार के हर सदस्य के हृदय में नया जोश व उमंग था क्योंकि इस बार लड़के वालों को मीनू की फोटो पसंद आ गई थी और वह उसे देखने आए थे।

(iii) मेहमानों के स्वागत के लिए विभिन्न प्रकार की तैयारियाँ की गई थीं। घर की सारी चीज़ें झाड़-पोंछकर यथास्थान लगा दी गई थीं। एक मध्यम श्रेणी की हैसियत के अनुसार बैठक को विशेष रूप से सुसज्जित किया गया था।

(iv) अमित और मीनू के बीच हुई बातचीत कुछ इस प्रकार है - अमित मीनू से उसकी पढ़ाई के विषय में तथा संयुक्त परिवार के संबंध में उसके विचार पूछता है।

12. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :-

धनीमल जी व मायाराम जी ने आपस में कुछ बातें कीं और सब वहाँ से उठकर चल दिए। अमित व सरिता को एकांत में बात करने का अवसर दिया गया। अमित ने सरिता से कुछ प्रश्न

किए।

- (i) धनीमल जी और मायाराम जी का परिचय देते हुए बताइए कि उनमें किस विषय पर बातचीत हो रही थी? [2]
- (ii) सरिता को देखकर अमित के मन में क्या विचार आए थे? स्पष्ट कीजिए। [2]
- (iii) अमित के माता-पिता उसका रिश्ता सरिता के साथ क्यों करना चाहते थे? इस सम्बन्ध में उन्होंने क्या तर्क दिए? [3]
- (iv) अमित के चरित्र पर प्रकाश डालिए। [3]

- उत्तर (i) धनीमल मेरठ के एक बड़े रईस व्यक्ति और सरिता के पिता हैं। मायाराम जी अमित के पिता हैं जो अपने परिवार सहित धनीमल की बेटी सरिता को देखने आए हुए हैं। इस समय उन दोनों के बीच अमित और सरिता के रिश्ते को लेकर आपस में बातचीत चल रही है।
- (ii) सरिता को देखकर अमित के मन में विचार आए कि एक घर को सुचारू रूप से चलाने के लिए कई चीजों की आवश्यकता होती है और सरिता को घर के कामों में कोई दिलचस्पी नहीं है तब अमित सोचता है कि एक बड़े घर की लड़की मध्यमवर्गीय परिवार के साथ कैसे सामंजस्य बिठा पाएगी।
- (iii) अमित के माता-पिता अमित का रिश्ता सरिता के साथ इसलिए करवाना चाहते थे क्योंकि सरिता बड़े और अमीर घर की लड़की थी और साथ ही धनीमल ने दहेज में पाँच लाख से अधिक रूपए देने का लालच दिया। अमित के माता पिता ने अमित को समझाया कि सरिता मीनू से ज्यादा सुंदर है।
- (iv) नया रास्ता कहानी में अमित का चरित्र बहुत साफ़ है। वह एक साफ़ हृदय का पुरुष है तथा उपन्यास का नायक है। मायाराम के बेटे के रूप में इस कहानी में सामने आया है। जब वह मीनू से मिलता है, तो उसे दिल से चाहने लगता है। उसके रंग रूप से ज्यादा वह उसके गुणों से प्रेम करता था। परंतु माता-पिता की वजह से वह अपनी बातों को सबके समक्ष रख नहीं पाया और अंदर ही अंदर टूट जाता है। परंतु जब किसी चीज़ को दिल से चाहो तो वह माँगने पर अवश्य मिलती है। अमित को देर से ही सही लेकिन मीनू का साथ मिला। वह एक अच्छा बेटा भी है जो माता-पिता के कारण सरिता से मिलने को तैयार हो जाता है अतः अमित एक अच्छा बेटा, अच्छा पति बनने के गुणों से संपन्न है। जिसके माध्यम से मीनू को आजीवन के लिए नया रास्ता मिल जाता है।

13. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

मीनू आज दुल्हन के रूप में कितनी सुन्दर लग रही थी, मीनू दुल्हन बनी, उसकी डोली सजी और अपने पिया संग ससुराल को चल दी।

- (i) मीनू ने पहले शादी से क्यों मना कर दिया था? [2]
- (ii) मीनू अब शादी करने के लिए क्यों तैयार हो गई? [2]
- (iii) तब की मीनू और अब की मीनू में क्या अंतर है? [3]
- (iv) हमारे समाज में फैली 'दहेज की कुप्रथा' पर एक टिप्पण लिखिए। [3]
- उत्तर (i) मीनू ने पहले शादी से इसलिए मना कर दिया था क्योंकि मीनू का रंग साँवला था, वह मध्यमवर्गीय परिवार की उच्च शिक्षित और सभी कार्यों में दक्ष युवती है। परंतु अपने साँवले रंग के कारण तथा लड़के वालों के मना करने और छोटी बहन को पसंद करने पर वह शादी से मना कर देती है।
- (ii) मीनू अब शादी करने के लिए इसलिए तैयार हो गई थी क्योंकि मीनू ने अपनी लगन और परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को पा लिया है। साथ लड़के वालों को भी मीनू का फोटो पसंद आ गया है, अतः अब वह शादी करने के लिए तैयार है।
- (iii) तब की मीनू और आज की मीनू में ज़मीन आसमान का अंतर है। पहले की मीनू अपने साँवले रंग के कारण हीनभावना से ग्रसित थी और उसने अपने मन की इच्छाओं को दबा रखा था, तथा आज की मीनू 'विशेष ख्याति' प्राप्त वकील है। उसने अपनी लगन और परिश्रम के बल पर अपना वकील बनने का लक्ष्य पूरा किया है। अब वह साहस और दृढ़ता से परिपूर्ण है।
- (iv) दहेज प्रथा समाज में चल रही बुराइयों में से एक है। ये मानव द्वारा बनाई गई एक प्रथा है। दुनिया भर में यह भी माना जाता है कि दुल्हन के परिवार से भारी मात्रा में उपहार आदि लेने से समाज में उनकी इज़्ज़त बढ़ जाती है। जबकि आँकड़े बताते हैं कि दहेज प्रथा ने ज्यादातर मामलों में लड़कियों के खिलाफ़ काम किया है अतः दहेजप्रथा ने पूरी तरह से समाज को अधिक नुकसान ही पहुँचाया है।

एकांकी संचय

(Ekanki Sanchay)

14. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :—

“मिसरानी कह रही थी” बहू कैसी भी हो, पर अपने प्राण देकर उसने पति को बचा लिया है, अकेली थी, पर किसी के आगे हाथ पसारने नहीं गई।

[संस्कार और भावना—विष्णु प्रभाकर]

[Sanskar Aur Bhavna—Vishnu Prabhakar]

- (i) 'बहू अकेली थी' ऐसा क्यों कहा गया है? [2]
- (ii) 'बहू की किन विशेषताओं ने सास को कुछ सोचने पर विवश कर दिया? [2]
- (iii) माँ का चरित्र-चित्रण कीजिए। [3]
- (iv) समाज के लिए जातिवाद किस प्रकार अहितकर है? [3]

- उत्तर (i) बहू अकेली है, ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि माँ ने अविनाश और उसकी बहू को घर से निकाल दिया था और वह अकेले रहते थे। जब अविनाश बीमार पड़ा तब माँ को कुमार की मिसरानी ने बताया कि अविनाश की बहू ने अपने प्राण खपाकर अपने पति को बचा लिया। वह अकेली थी, पर किसी के आगे मुसीबत के समय हाथ नहीं फैलाने गई। स्वयं ही दवा लाती थी, घर का काम करती थी और अविनाश को भी देखती थी।
- (ii) जब माँ को यह समाचार मिलता है कि अविनाश की पत्नी ने दिन-रात सेवा कर अपने पति को बचा लिया लेकिन अब वह खुद मरणासन्न अवस्था में है, तो माँ बेचैन हो जाती है। उसे मालूम है कि यदि बहू को कुछ हो गया, तो अविनाश भी बचेगा नहीं। तब वात्सल्य, ममता और पुत्रप्रेम के सामने उसके संस्कार नहीं टिक पाते। संस्कारों की दासता से मुक्त होकर वह तुरंत अविनाश के घर जाने के लिए तैयार हो जाती है।
- (iii) माँ एकांकी की प्रमुख पात्र है। वह संस्कारों से बंधी है। वह एक हिन्दू वृद्धा है। वह हिन्दू समाज के रूढ़िवादी संस्कारों से ग्रस्त है। वह संस्कारों से इस प्रकार बंधी है कि रीति-रिवाजों से बाहर नहीं आ पाती है। एक मध्यम परिवार में अपने पुराने संस्कारों की रक्षा करना धर्म माना जाता है। माँ भी वही करना चाहती थी। अपने बड़े बेटे अविनाश द्वारा एक विजातीय बंगाली महिला से विवाह कर लेने पर वह बेटे बहू से नाता ही तोड़ लेती है। वह बहुत भावुक है। बड़े लड़के की बीमारी की बात सुनकर वह व्याकुल हो उठती है। जब उसे पता लगता है कि उसकी बड़ी बहू ने अविनाश की बीमारी में बहुत सेवा की है, तो उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है। अविनाश की बहू की मरणासन्न अवस्था का पता लगने पर माँ के मन में बहू के प्रति ममता व स्नेह जाग जाता है और वह वहाँ जाने को तैयार हो जाती है अतः माँ दयालु और ममतामया भी है।
- (iv) हमारे समाज के लिए जातिवाद अहितकर है। जातिवाद के कारण समाज अनगिनत वर्गों में बँट चुका है। हर कोई अपनी जाति को ऊँचा तथा महान् बताते हुए दूसरी जातियों को हीन समझते हुए उनका परिष्कार करते हैं। इस कारण समाज में आपसी बैर बढ़ता है तथा प्रेम, सदभावना एवं एकता खंडित होती है। इस एकांकी में माँ अविनाश के अंतर्जातीय विवाह को स्वीकार नहीं करती। वह जातिवाद की बेड़ियों में जकड़ी होने के कारण अपने बेटे से दूर हो जाती है।

15. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

आत्मरक्षा का और कोई उपाय न देखकर महाबली सुयोधन द्वैत वन के सरोवर में घुस गए और उसके जल स्तंभ में छिपकर

बैठे रहे। पर न जाने कैसे पांडवों को इसकी सूचना मिल गई और वे तत्काल रथ पर चढ़कर वहाँ पहुँच गए।

['महाभारत की एक साँझ'—भारत भूषण अग्रवाल]

['Mahabharat Ki Ek Sanjh'—Bharat Bhushan Agarwal]

- (i) वक्ता, श्रोता कौन-कौन हैं ? दोनों में ये बातें कहाँ और किस संदर्भ में हो रही हैं ? [2]
- (ii) द्वैत वन कहाँ स्थित है ? पांडव वहाँ क्यों पहुँचे ? [2]
- (iii) सुयोधन किसे कहा गया है ? उसने आत्मरक्षा के लिए क्या उपाय किया ? क्या वह सफल हो पाया ? स्पष्ट कीजिए। [3]
- (iv) महाभारत युद्ध किनके बीच हुआ था ? एकांकी के शीर्षक के औचित्य को समझाइए। [3]
- उत्तर (i) इस एकांकी में वक्ता 'संजय' और श्रोता धृतराष्ट्र है। दोनों में ये बातें हस्तिनापुर के राजमहल में महाभारत के युद्ध के संदर्भ में हो रही हैं।
- (ii) द्वैतवन जिला सहारनपुर, उत्तरप्रदेश में स्थित है। पाण्डव वहाँ दुर्योधन को खोजते हुए पहुँचे थे।
- (iii) सुयोधन दुर्योधन को कहा गया है। उसने अपनी आत्मरक्षा के लिए खुद को एक द्वैतवन के सरोवर में छिपा लिया था। वह अपनी आत्मरक्षा में सफल नहीं हो पाया था क्योंकि एक अहेरी द्वारा सूचना दिए जाने पर पाण्डव वहाँ आ पहुँचे और उसे युद्ध के लिए बार-बार ललकारते। तब दुर्योधन जलाशय से बाहर आकर कहता है कि मुझे युद्ध से विरक्ति हो गई परंतु पाण्डव उसकी एक नहीं सुनते और उसे युद्ध के लिए ललकारते। फिर भीम ने उसकी जंघा पर प्रहार कर उसे मृत्यु के घाट उतार दिया।
- (iv) महाभारत का युद्ध कौरवों और पाण्डवों के बीच हुआ। प्रस्तुत एकांकी का औचित्य है कि आप चाहे कितने भी कूटनीतिज्ञ, बलवान और बुद्धिमान क्यों न हो परंतु यदि आपका रास्ता धर्म का नहीं है तो आपका अंत होना निश्चित है। साथ ही यह एकांकी मनुष्य को त्याग और सहनशीलता का पाठ भी पढ़ाती है। यही वे दो मुख्य कारण थे जिसकी कमी के कारण महाभारत का युद्ध लड़ा गया। जो कि उचित नहीं था। कभी भी पारिवारिक धन - संपत्ति के लिए अपने ही भाइयों से ईर्ष्या और वैमनस्य नहीं रखना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के लड़ाई-झगड़े में जीत कर भी हार ही होती है।

16. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

मैं ही क्या, सारे नगर-निवासी यह त्योहार मना रहे हैं, नहीं मना ही हो तो तुम ! धाय माँ तुम ! पहाड़ बनने से क्या होगा ? राजमहल पर बोझ बनकर जाओगी, बोझ ! और नदी बने तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, पत्थर भी !

['दीपदान'—डॉ. रामकुमार वर्मा]

['Deepdan'—Dr. Ram Kumar Verma]

- (i) वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]

- (ii) 'पहाड़' और 'नदी' से वक्ता का क्या तात्पर्य है ? वह श्रोता को क्या सुझाव देती है ? [2]
- (iii) वक्ता के सुझाव पर श्रोता की क्या प्रतिक्रिया होती है ? समझाकर उत्तर लिखिए। [3]
- (iv) श्रोता का चरित्र किस प्रकार प्रेरणादायक है ? एकांकी के आधार पर समझाइए। [3]
- उत्तर (i) वक्ता – सोना है। जो रावल सरूपसिंह की अत्यंत सलोनी एवं रूपवती पुत्री थी। सोलह वर्षीय सोना कुँवर उदय सिंह के बचपन की मित्र है। वह नृत्यकला में पारंगत है। बनवीर के द्वारा दिए गए लालच की ओर आकर्षित होती है। स्वभाव से नटखट भी है। कुँवर के साथ खेलती है। वह बोलने में भी चतुर है।
- (ii) वक्ता सोना श्रोता पन्ना धाय माँ को राजमहल पर पहाड़ जैसा बोझ बनकर रहने से अच्छा नदी की तरह बहते हुए रहने का सुझाव देती है। सोना कहती है कि अगर तुम नदी बनकर रहोगी तो तुम्हारे जीवन में आनंद और मंगल हमेशा बना रहेगा। वह पन्ना से कहती है कि बनवीर पर संदेह न करके दीपदान के उत्सव में भाग ले।
- (iii) श्रोता पन्ना धाय माँ अनुभवी है। वह अच्छी तरह समझती है कि ऐसे उत्सवों के पीछे एक षडयंत्र रचा गया है इन्हीं उत्सवों के बहाने सत्ता परिवर्तन तथा किसी विशेष व्यक्ति की हत्या अवश्य होती है इसलिए वह उस उत्सव में न तो स्वयं जाती है न ही उदयसिंह को भेजती है। वह सोना को भी समझाती है कि 'चित्तौड़' राग-रंग की भूमि नहीं है, यह जौहर प्रतिभा दिखाने वालों की भूमि है।
- (iv) श्रोता पन्ना धाय माँ का चरित्र सबके लिए प्रेरणादायक है। वह देशप्रेम की भावना को प्रत्येक पढ़नेवालों के हृदय में जगाती है। पन्ना महाराणा सांगा के छोटे पुत्र उदयसिंह की संरक्षिका अर्थात् सेविका है। बनवीर से कुँवर की रक्षा के लिए अपने पुत्र चन्दन का बलिदान कर देती है। उसकी कर्तव्यपरायणता सभी के लिए प्रेरणादायी है। अपनी स्वामीभक्ति व राष्ट्रीयता के गुणों के कारण वह आदर्श भारतीय नारी का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है। वह एक सच्ची भारतीय वीरांगना है।

